

निष्कर्ष

6.1 कम्पनी सीमित संख्या में प्रमुख खिलाड़ियों के साथ लौह अयस्क का कारोबार करती है जिसमें प्रचालन मार्जिन और लाभ बहुत अधिक है। कम्पनी ने यह कारोबार काफी अच्छे ढंग से किया तथा 2011-12 में ₹ 13,278 करोड़ की आय पर ₹ 10,760 करोड़ का कस-पूर्व लाभ कमाया।

6.2 हमारे ही द्वारा निर्धारित लेखापरीक्षा उद्देश्यों के आधार पर, हमने निम्नलिखित बातें देखीं:

- कम्पनी की उत्पादन क्षमता कारपोरेट योजना में निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप थी। 2005-09 तथा 2011-12 के बीच क्षमता उपयोग 85 प्रतिशत अथवा अधिक था। यह, एस्सार स्टील्स लिमिटेड की निकास पाइपलाइन में क्षति और निकास क्षमता विस्तार योजनाओं के कार्यान्वयन में विलम्ब के कारण 2009-10 और 2010-11 में 80 प्रतिशत से भी कम हो गया।
- मांग का पूर्वानुमान लगाते हुए, कम्पनी ने वर्ष 1997 तथा 2003 में क्रमशः कुमारस्वामी डिपॉज़िट तथा 11 बी डिपॉज़िट को विकसित करने का निर्णय लिया। ये दोनों परियोजनाएं मार्च 2012 में अभी कार्यान्वयनाधीन थीं। कुमारस्वामी डिपॉज़िट के परियोजना कार्यान्वयन में विलम्ब मुख्यतः सांविधिक अनुमोदन प्राप्त करने में विलम्ब के कारण था तथा डिपॉज़िट 11 बी में विलम्ब मुख्यतः बाह्य कठिनाईयों के कारण था। विलम्ब पैकेजों के कार्यान्वयन के दौरान भी देखे गए थे जो परियोजना प्रबंधन में कमियों के कारण थे। परियोजना की लागतें काफी बढ़ गई थीं।
- उत्पादन क्षमता की उत्पादन को खानों से क्रेताओं के स्थलों तक निकास के लिए पर्याप्त परिवहन सुविधाओं द्वारा सहायता की जानी चाहिए। बेलाडिला क्षेत्र में निकास सुविधाएं अपर्याप्त थीं। निकास क्षमता को बढ़ाने के लिए उपलब्ध विकल्पों को कम्पनी द्वारा तेज़ी से आगे नहीं बढ़ाया गया था।
- कम्पनी ने लौह अयस्क की आपूर्ति हेतु जेएसएम के साथ दीर्घावधि करार किए। कम्पनी द्वारा तय की गई कीमतें जेएसएम द्वारा ऑस्ट्रेलियन और ब्राज़ीली आपूर्तिकर्ताओं को प्रदत्त कीमतों के अनुरूप थीं। तथापि, बाज़ार कीमतों के उतार-चढ़ाव के अनुरूप घरेलू कीमतों का संशोधन न करने के कारण, कम्पनी ने 2007-10 के दौरान ₹ 745.94 करोड़ की राजस्व हानि उठाई।
- कीमत में अनुचित कमी करने के कारण, कम्पनी ने 2010-11 के दौरान ग्राहकों को ₹ 600.83 करोड़ का लाभ प्रदान किया। इसके अतिरिक्त, निर्यात कीमतों में वृद्धि के अनुरूप पूर्ण प्रतिशत तक कीमतें न बढ़ाने के कारण उसी अवधि के दौरान ₹ 227.40 करोड़ की हानि हुई।

- 2011-12 के दौरान, कम्पनी ने लौह अयस्क की कीमतें नियत करने की "नैट बैक" विधि और "घरेलू कीमत समानता" विधि अपनाई। नैट बैक विधि कीमत को दबाती है तथा घरेलू कीमत समानता विधि, जो ओएमसी कीमतों पर आधारित है, मूल्य-निर्धारण की एक अधूरी विधि है क्योंकि खान तक की कीमतें अयस्क की गुणवत्ता और परिवहन दूरी के आधार पर भिन्न होती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए अन्त-उत्पाद (इस्पात) कीमतें बाज़ार द्वारा संचालित होती हैं, यह वांछनीय है कि एनएमडीसी उस तंत्र का अनुसरण करे जो ग्राहकों को आश्वस्त आपूर्तियां तथा पूर्वानुयेय कीमतें प्रदान करते समय अपनी अभीष्टतम कीमतें प्राप्त करे।
- निदेशक-मंडल से प्रचालन के प्रमुख क्षेत्रों को मॉनीटर करने और यदि प्रचालन अभिप्रेत प्रगति करते नहीं पाए जाते तो उपचारी कार्रवाई करना अपेक्षित है। दो क्षमता विस्तार योजनाओं के कार्यान्वयन में विलम्ब हुआ था। यद्यपि, बोर्ड ने 2005-12 के दौरान 63 बैठकें आयोजित की, तथापि, उसने सही प्रगति न करने वाली मुख्य परियोजनाओं की पर्याप्त मॉनीटरिंग नहीं की। तत्पश्चात् बोर्ड ने विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा के लिए मार्च 2010 में एक उप-समिति का गठन किया। घरेलू एलटीए के मामले में कीमत संशोधन के संबंध में, बोर्ड ने कीमतों के संशोधन से संबंधित शर्तों में स्पष्टता के संबंध में कोई मार्गदर्शन नहीं दिया अर्थात् कीमतों में कितना और कब से संशोधन लागू किया जाए।

मंत्रालय द्वारा निरीक्षण त्रुटिपूर्ण था क्योंकि उसने कार्यान्वयनाधीन परियोजनाओं के लिए आरएफडी में समुचित लक्ष्य निर्धारित नहीं किए।

सिफारिशें

6.3 हम सुधार के लिए निम्नलिखित सिफारिशें करते हैं:

- ❖ कम्पनी को नई खानों/रिज़र्वों के अधिग्रहण हेतु अपनी योजनाएं बनाने के लिए एक रणनीति बनानी चाहिए;
- ❖ कम्पनी को परियोजना नियोजन, कार्यान्वयन और मॉनीटरिंग पर ध्यान दे कर अपनी परियोजना प्रबंधन क्षमता बढ़ानी चाहिए। इस संबंध में, कम्पनी को सभी परियोजना क्रियाकलापों के लिए समयसीमा और माइलस्टोन निर्धारित करने चाहिए और सतत मॉनीटरिंग और अपेक्षित उपचारी कार्रवाई के माध्यम से उनका कड़ाई से पालन सुनिश्चित करना चाहिए;
- ❖ बोर्ड को स्लरी पाइपलाईन बिछाने की प्रगति की नियमित रूप से मॉनीटरिंग करनी चाहिए;
- ❖ के-के लाईन के दोहरीकरण से संबंधित मुद्दे रेल मंत्रालय स्तर पर उठाए जाने चाहिए और इनको आगे बढ़ाना चाहिए ताकि उन्हें पूरा करने की कार्रवाई में तेज़ी लाई जा सके।
- ❖ लौह अयस्क के लिए घरेलू कीमत नियतन तंत्र विकसित किया जाए जो निम्नलिखित मुद्दों का समाधान करेगा;

- एनएमडीसी " के अयस्क हेतु अभीष्ट कीमत की वसूली;
 - घरेलू उत्पाद उत्पादकों को आश्वस्त आपूर्ति तथा;
 - कीमत की भविष्यवाणी।
- ❖ कम्पनी के निदेशक-मंडल को समय-समय पर चालू परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा करनी चाहिए और जहां आवश्यक हो उपचारी कार्रवाई सुझानी चाहिए ताकि परियोजनाएं अभिकल्पना के अनुसार ही पूरी की जा सकें।

नई दिल्ली
दिनांक:

(ए.के.पटनायक)
भारत के उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक एवं
अध्यक्ष, लेखापरीक्षा बोर्ड

प्रतिहस्ताक्षरित

नई दिल्ली
दिनांक:

(विनोद राय)
भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक